प्रकृति को समझाने का प्रयत्न किया। ये सिद्धान्त हैं—धर्म के सिद्धान्त, सम्पत्ति के सिद्धान्त, परिवार के सिद्धान्त तथा भाषा के सिद्धान्त। कॉम्ट ने बताया कि धर्म मनुष्यों के बीच एकता उत्पन्न करता है, जबकि सम्पत्ति समाज की क्रियाओं का परिणाम है। भाषा किसी भी समाज की बौद्धिक प्रकृति को स्पष्ट करती है, जबकि परिवार की संरचना के अनुसार ही सामाजिक संरचना का निर्धारण होता है। इस प्रकार धार्मिक सिद्धान्तों, सम्पत्ति के रूप, भाषा की प्रकृति तथा परिवार की संरचना के आधार पर ही किसी समाज की प्रकृति को समझा जा सकता है।

स्पष्ट है कि तीन स्तरों का नियम, प्रत्यक्षवाद, विज्ञानों का संस्तरण, समाज की सावयवी अवधारणा, समाजशास्त्र के अध्ययन-क्षेत्र का निर्धारण तथा सामाजिक पुनर्निर्माण की योजना कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत वे प्रमुख विचार हैं जिनके द्वारा उन्होंने समाजशास्त्र को एक नये सामाजिक विज्ञान के रूप में स्थापित किया। इसी कारण **बोगार्डस** ने लिखा है कि "वह कॉम्ट सामाजिक चिन्तन के क्षेत्र को विस्तारित करने वाले पहले व्यक्ति थे।"[1] यह सच है कि एक प्रारम्भिक समाजशास्त्री होने के कारण कॉम्ट के अनेक विचारों में मौलिकता का अभाव है लेकिन उन्होंने जिस दृढ़ निश्चय और निष्ठा के साथ एक पृथक् विज्ञान की स्थापना की, उससे कॉम्ट की बौद्धिक क्षमता स्वयं ही स्पष्ट हो जाती है। **बार्न्स** (Barnes) का कथन है, "कॉम्ट के सामाजिक दर्शन के सभी प्रमुख अध्येयता यह मानते हैं कि समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट का मुख्य योगदान किन्हीं नये और मौलिक सामाजिक सिद्धान्तों के विकास की तुलना में उनकी समन्वयकारी और संगठन की असाधारण योग्यता में देखने को मिलता है।"[2] **बार्न्स** ने आगे लिखा है कि "कॉम्ट की प्रमुख रचनाओं का सामान्य अध्ययन करके हम जल्दी ही इस तथ्य से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते कि उपर्युक्त शीर्षकों में उनके जो विचार प्रस्तुत किये गये हैं, समाजशास्त्र के लिए कॉम्ट की देन उससे कहीं अधिक है।"[3]

तीन स्तरों का नियम
(LAW OF THREE STAGES)

सामाजिक विचारधारा के क्षेत्र में कॉम्ट का 'तीन स्तरों का नियम' समाजशास्त्र के लिए उनका एक अनुपम योगदान है। इस नियम के द्वारा कॉम्ट ने मानव समाज और बौद्धिक विकास की विभिन्न अवस्थाओं को स्पष्ट किया है। यह नियम कॉम्ट की बौद्धिक क्षमता को भी स्पष्ट करता है क्योंकि कॉम्ट ने सन् 1822 में अपनी 24 वर्ष की आयु में ही इस नियम को प्रस्तुत कर दिया था। यह नियम कॉम्ट की उस मान्यता को स्पष्ट करता है जिसमें उनका मानना था कि प्राकृतिक तथ्यों की तरह समाज का विकास भी कुछ निश्चित नियमों के आधार पर होता है। वास्तविकता यह है कि तीन स्तरों के नियम को समझे बिना कॉम्ट के सिद्धान्तों और उनकी समाजशास्त्र की अवधारणा को नहीं समझा जा सकता है। इस सम्बन्ध में **फ्लेचर** (Fletcher) ने लिखा है, "मानसिक तथा सामाजिक विकास की तीन अवस्थाएँ सहयोग की अनुभूति, व्यक्ति तथा समाज के चिन्तन और क्रिया से सम्बन्धित होती हैं।"[4] एक नये सामाजिक विज्ञान की आधारशिला रखते हुए कॉम्ट ने बताया कि सभी समाजों में अधिकांश व्यक्ति लगभग समान रूप से चिन्तन करते हैं, अतः एक निश्चित अवधि में समाज को चिन्तन की किसी विशेष अवस्था से ही सम्बन्धित माना जा सकता है। दूसरे शब्दों में, सामाजिक विकास का अध्ययन मानव के बौद्धिक विकास की अवस्थाओं या स्तरों के आधार पर ही किया जा सकता है। कोंत द्वारा प्रतिपादित मानव के बौद्धिक विकास अथवा चिन्तन की यह तीन अवस्थाएँ निम्न प्रकार हैं :

1. धार्मिक अथवा काल्पनिक स्तर (Theological Stage),
2. तात्विक अथवा अमूर्त स्तर (Metaphysical Stage), तथा
3. प्रत्यक्षवादी अथवा वैज्ञानिक स्तर (Positive Stage)।

1 "He was the first to stake out the territory of social thought."—E. S. Bogardus, *The Development of Social Thought*, pp. 243-44.

2 "It is generally conceded by foremost students of Comte's social philosophy that his chief contribution lay in his remarkable capacity for synthesis and organization rather then in the development of new and original social doctrines." —H. E. Barnes, *An Introduction to the History*, p. 83.

3 H. E. Barnes, *Ibid.*, p. 84.

4 Fletcher, *The Making of Sociology*, Vol. I, p. 168.

Scanned with CamScanner

उपर्युक्त तीन स्तरों की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए **कॉम्ट** ने लिखा है, "हमारे सभी प्रमुख विचार तथा ज्ञान की प्रत्येक शाखा तीन विभिन्न सैद्धान्तिक स्तरों में से होकर गुजरती है जिन्हें हम धर्मशास्त्रीय अथवा काल्पनिक स्तर, तात्विक अथवा अमूर्त स्तर एवं वैज्ञानिक अथवा प्रत्यक्षवादी स्तर कहते हैं।"[1] बौद्धिक विकास के इन तीन स्तरों को एक व्यक्ति के जीवन पर लागू करते हुए **अब्राहम** और **मॉर्गन** ने सरल भाषा में इसे इस प्रकार व्यक्त किया है, "एक व्यक्ति अपने बचपन में अधिप्राकृतिक (super-natural) शक्तियों के प्रति अनेक प्रकार के अन्धविश्वासों से घिरा रहता है और अक्सर उनसे भयभीत भी रहता है। युवावस्था में वही व्यक्ति धार्मिक अन्धविश्वासों को छोड़कर तात्विक अथवा विश्व सम्बन्धी सिद्धान्तों के आधार पर चिन्तन करने लगता है। ऐसे चिन्तन का आधार अनेक नैतिक मानदण्ड होते हैं। वृद्धावस्था में उसी व्यक्ति का दृष्टिकोण कहीं अधिक व्यावहारिक हो जाता है तथा वह वैज्ञानिक अथवा प्रत्यक्षवादी ढंग से विचार करने लगता है।"[2] चिन्तन के यदि इस विकास क्रम को सम्पूर्ण समाज के सन्दर्भ में देखा जाय तो भी यह क्रम लगभग इन्हीं स्तरों में से गुजरता हुआ दिखायी देता है। कॉम्ट ने स्पष्ट किया कि चिन्तन की अवस्थाओं का सामाजिक विकास से एक घनिष्ट सम्बन्ध है। अधिकांश व्यक्तियों का मस्तिष्क चिन्तन के जिस स्तर पर होता है, सामाजिक विकास भी उसी स्तर से सम्बन्धित हो जाता है। इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि चिन्तन अथवा बौद्धिक विकास के इन तीनों स्तरों की प्रकृति को समझा जाय।

(1) धार्मिक अथवा काल्पनिक स्तर (Theological Stage)

इस स्तर को कॉम्ट मानवीय चिन्तन तथा बौद्धिक विकास का प्रारम्भिक स्तर मानते हैं। इस स्तर में मानव मस्तिष्क का विकास बहुत सीमित होने के कारण इसे आदिम मानव के चिन्तन का स्तर कहा जा सकता है। इस अवस्था में व्यक्ति यह समझता है कि संसार की प्रत्येक वस्तु तथा प्रत्येक घटना के पीछे कोई दैविक या अलौकिक शक्ति काम कर रही है। वह प्रत्येक घटना, उसके कारण तथा परिणाम को ईश्वर अथवा किसी 'अलौकिक शक्ति की इच्छा' के रूप में देखता और मानता है। इस सन्दर्भ में **कॉम्ट** का कथन है, "धार्मिक अवस्था में मानव मस्तिष्क अपने सभी प्रयत्नों और कार्यों का प्रारम्भिक और अन्तिम कारण, संक्षेप में सम्पूर्ण ज्ञान की खोज के लिए, यह मान लेता है कि समस्त घटनाएँ किन्हीं अलौकिक प्राणियों द्वारा उत्पन्न और उन्हीं की तात्कालिक क्रियाओं का परिणाम हैं।"[3] उदाहरण के लिए, इस स्तर में व्यक्ति अपनी प्रत्येक सफलता-असफलता, प्रेम या संघर्ष अथवा किसी भी क्रिया का मूल्यांकन धार्मिक विश्वासों के आधार पर करने लगता है। वह यह विश्वास करता है कि वर्षा, बादलों का गरजना, बिजली का चमकना, दिन-रात का होना, वनस्पतियों का उगना तथा जन्म और मृत्यु जैसी घटनाएँ किसी अलौकिक शक्ति की इच्छा से ही नियन्त्रित होती हैं। अपने सीमित बौद्धिक विकास के कारण जब वह किसी घटना के वास्तविक कारण को नहीं समझा पाता, तब वह उसकी विवेचना काल्पनिक विश्वासों के आधार पर करने लगता है। धार्मिक विश्वास स्वयं कल्पना पर आधारित होते हैं। इसी कारण कॉम्ट ने इस स्तर को धार्मिक अथवा काल्पनिक स्तर कहा है। कॉम्ट के अनुसार इस स्तर के भी तीन उप-स्तर (sub-stages) हैं जिन्हें निम्नांकित रूप से समझा जा सकता है :

(i) जीवित सत्तावाद अथवा प्रेतवाद (Fetichism)—कॉम्ट के अनुसार चिन्तन के धार्मिक स्तर की यह सबसे पहली अवस्था है। इस स्तर में व्यक्तियों का यह विश्वास होता है कि प्रत्येक जड़ तथा चेतन वस्तु में जीवन होता है। वह यह मानने लगता है कि वृक्षों, पौधों, नदियों, पहाड़ों तथा पत्थरों में भी किसी-न-किसी अलौकिक शक्ति का वास होने के कारण उनमें जीवन होता है—एक ऐसा जीवन जो मानवीय क्रियाओं पर अच्छा या बुरा प्रभाव डाल सकता है। फलस्वरूप चिन्तन के इस आरम्भिक स्तर पर व्यक्तियों में आत्मा तथा भूत-प्रेत जैसे विश्वास प्रबल हो जाते हैं। व्यक्ति जादू-टोने जैसी क्रियाओं के द्वारा विभिन्न पदार्थों में व्याप्त जीवित सत्ता को प्रसन्न करने का प्रयत्न करने लगते हैं। कॉम्ट का विचार है कि यह

1 "Each branch of our knowldge passes successively through three different theoretial conditions, the theological, the metaphysical and the positive stage."—Auguste Comte, *Positive Polity*, Vol. IV, p. 9.

2 Abraham and Morgan, *Sociological Thought*, p. 7.

3 "In the theological stage, the human mind, seeking the essential nature of beings, the first and the final cause of all effects in short—absolute knowledge, supposes all phenomena to be produced by the immediate action of supernatural beings."—Auguste Comte, quoted by R. Chambliss, *Social Thought*, p. 417.

Scanned with CamScanner

आदिम मानव के चिन्तन का स्तर है क्योंकि जो जनजातियाँ आदिम मानव की विशेषताओं से युक्त हैं, वे प्रत्येक पदार्थ में किसी-न-किसी आत्मा का निवास होने का विश्वास करती हैं।

(ii) **बहु-देवत्ववाद** (Polytheism)—धार्मिक स्तर का दूसरा उप-स्तर बहु-देवत्ववाद है। एक लम्बे समय तक मानव का चिन्तन प्रेतात्माओं के विश्वासों से बँधा रहा लेकिन मानव चिन्तन जब कुछ विकसित हुआ, तब वह धीरे-धीरे यह समझने लगा कि न तो प्रत्येक पदार्थ में जीवन होता है और न ही मनुष्य के सभी व्यवहार प्रेतात्माओं से प्रभावित होते हैं। इस स्तर पर व्यक्ति का चिन्तन अनेक ऐसे अलौकिक विश्वासों से प्रभावित होने लगता है जिनका सम्बन्ध अनेक देवी-देवताओं से होता है। इस अवस्था में मनुष्य का मस्तिष्क तुलनात्मक रूप से अधिक संगठित हो जाता है तथा मानव की तर्क-शक्ति बढ़ने लगती है। फलस्वरूप व्यक्ति अधि-प्राकृतिक शक्तियों की प्रकृति और कार्यों के आधार पर उन्हें विभिन्न समूहों में विभाजित करके कुछ प्रमुख देवी-देवताओं की शक्ति में विश्वास करने लगता है। इस प्रकार बहु-देवत्ववाद धार्मिक चिन्तन का वह स्तर है जिसमें व्यक्ति सभी दशाओं को किसी विशेष देवी-देवता की प्रसन्नता अथवा अप्रसन्नता का परिणाम मानने लगता है। उदाहरण के लिए, अतिवृष्टि या अनावृष्टि के लिए इन्द्र, आँधी-तूफान के लिए वायु देवता तथा निर्धनता और समृद्धता के लिए लक्ष्मी की शक्ति में विश्वास करना बहु-देवत्ववाद के स्तर को स्पष्ट करता है।

(iii) **एकेश्वरवाद** (Monotheism)—धार्मिक अवस्था का यह अन्तिम स्तर है जिसमें मानव के चिन्तन में कुछ अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। इसके फलस्वरूप व्यक्ति के मन में इस तरह की शंकाएँ उठने लगती हैं कि यदि विभिन्न कार्यों का संचालन अलग-अलग देवी-देवताओं के द्वारा होता है तो उनकी क्रियाओं में भिन्नता भी अवश्य होगी। इसके विपरीत, प्रकृति और सृष्टि में सभी स्थानों पर इतनी समानता है कि इसका संचालन एक सर्वशक्तिमान ईश्वर के द्वारा ही सम्भव है। इस स्तर में भी विभिन्न देवी-देवताओं के विश्वास समाप्त नहीं हो जाते बल्कि अनेक देवताओं को भी एक सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा ही संचालित और संगठित माना जाने लगता है। कोंत के अनुसार धार्मिक अवस्था के अन्तर्गत प्रेतवाद, बहु-देवत्ववाद तथा एकेश्वरवाद जैसे तीनों स्तर एक के बाद एक निश्चित क्रम में विकसित होते हैं। एक ईश्वरवाद के स्तर पर मनुष्य का धार्मिक चिन्तन तुलनात्मक रूप से अधिक गहन होता है, यद्यपि वह प्रत्येक घटना के कारण और परिणाम की व्याख्या किसी अलौकिक सत्ता के सन्दर्भ में ही करता है।

(2) तात्विक अथवा अमूर्त स्तर (Metaphysical Stage)

कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत तीन स्तरों के नियम का दूसरा स्तर तात्विक अथवा अमूर्त स्तर है जो धार्मिक और वैज्ञानिक स्तर के बीच की दशा को स्पष्ट करता है। इस स्तर में तार्किकता के साथ कुछ अमूर्त शक्तियों के विश्वास का भी समावेश होने लगता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि व्यक्ति एक ओर जहाँ घटनाओं के कारण की खोज करना चाहता है, वहीं दूसरी ओर, वह अलौकिक शक्तियों में भी विश्वास करता रहता है। इस स्तर में मनुष्य यह सोचने लगता है कि प्रत्येक घटना के पीछे ईश्वर प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान नहीं होता बल्कि एक अदृश्य, निराकार और अमूर्त शक्ति मनुष्य के सभी व्यवहारों और घटनाओं को प्रभावित करती है। इस प्रकार धार्मिक स्तर में अलौकिक शक्ति की कल्पना जहाँ साकार अथवा मूर्त रूप में की जाती है, वहीं तात्विक स्तर पर ईश्वर को एक ऐसी अमूर्त शक्ति के रूप में देखा जाने लगता है जो सभी प्राणियों में विद्यमान है। इसे स्पष्ट करते हुए **कॉम्ट** ने लिखा है, "तात्विक स्तर में, जो केवल प्रथम स्तर का ही संशोधित रूप है, मस्तिष्क यह मानने लगता है कि अलौकिक शक्तियों की अपेक्षा कुछ अमूर्त शक्तियाँ ही वास्तविक सत्ता के रूप में सभी जीवों में विद्यमान रहती हैं अर्थात् गुणात्मक मानवीकरण तथा उनमें सभी तरह की घटनाओं को उत्पन्न करने की शक्ति होती है।"[1] इस प्रकार कॉम्ट ने तात्विक स्तर के अन्तर्गत गुणात्मक मानवीकरण (personified abstraction) की दशा पर विशेष बल दिया। इसका तात्पर्य है कि तात्विक स्तर में व्यक्ति यह मानने लगता है कि ईश्वरीय सत्ता प्रत्येक जीव के अन्दर विद्यमान है तथा नैतिक और मानवीय गुणों को विकसित करना ही मानव जीवन का सबसे प्रमुख ध्येय है। वास्तव में, तत्व ज्ञान एक विश्वास तथा रहस्यपूर्ण गुण है जो अपनी प्रकृति से अमूर्त होते हुए भी मानवीय क्रियाओं को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। इसी आधार पर तात्विक स्तर को अमूर्त स्तर भी कहा जाता है।

1 "In the metaphysical stage which is only the modification of the first, the mind supposes instead of supernatural beings, abstract forces, veritable entities (*i.e.*, personified abstraction) inherent in all beings and capable of producing all phenomena." —Quoted by R. Chambliss, *op. cit.*, p. 417.

Scanned with CamScanner

(3) प्रत्यक्षवादी अथवा वैज्ञानिक स्तर (Positive Stage)

कॉम्ट द्वारा प्रस्तुत तीन स्तरों के नियम का यह अन्तिम स्तर है जिसे कॉम्ट ने प्रत्यक्षवादी स्तर का नाम दिया। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, यह वह स्तर है जिसमें मनुष्य धार्मिक और काल्पनिक विचारों को छोड़कर केवल उन्हीं तथ्यों को वास्तविक मानता है जिन्हें प्रत्यक्ष रूप से दखा जा सके। घटनाओं का प्रत्यक्ष रूप से अवलोकन करके तर्क के आधार पर उनकी विवेचना करना ही विज्ञान है। अत: इस स्तर को वैज्ञानिक स्तर भी कहा जाता है। कोंत ने प्रत्यक्षवादी स्तर का आरम्भ उन्नीसवीं शताब्दी के समय से माना है जिसमें मानव ने कल्पनात्मक चिन्तन की जगह घटनाओं का वैज्ञानिक ढंग से अवलोकन करना आरम्भ कर दिया।[1] इस स्तर में व्यक्ति किसी घटना के कारण और परिणाम की व्याख्या किसी अलौकिक शक्ति अथवा भावनात्मक आधार पर नहीं करते बल्कि घटनाओं का विश्लेषण अवलोकन, परीक्षण, वर्गीकरण और तार्किकता के आधार पर किया जाता है। प्रत्यक्षवादी स्तर की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए **कॉम्ट** ने लिखा है, "..... प्रत्यक्षवादी अवस्था में मानव-मस्तिष्क निरपेक्ष धारणाओं, सृष्टि की उत्पत्ति व उसके लक्ष्यों तथा विभिन्न घटनाओं के कारणों की व्यर्थ की खोज को त्याग देता है तथा मस्तिष्क का उपयोग विभिन्न घटनाओं के घटित होने के क्रम और उनकी समानताओं से सम्बन्धित नियमों के अध्ययन के लिए करने लगता है।"[2] दूसरे शब्दों में, यह वह स्तर है जिसमें विभिन्न घटनाओं के घटित होने के नियमों को अवलोकन, परीक्षण तथा तार्किक आधार पर समझने का प्रयत्न किया जाता है। वस्तुनिष्ठ ज्ञान को संचित करना मनुष्य का प्रमुख उद्देश्य होता है। कॉम्ट का कथन है कि तर्क और अवलोकन का समन्वित रूप ऐसे ज्ञान को प्राप्त करने का मुख्य साधन है। सरल शब्दों में, यह वह स्तर है जिसमें हम घटनाओं को उसी रूप में देखते और व्याख्या करते हैं, जैसी कि वे वास्तव में हैं। इस स्तर में कॉम्ट ने अवलोकन और तर्क को इस कारण समान रूप से महत्वपूर्ण माना कि अवलोकन से घटनाओं की वास्तविकता का ज्ञान होता है, जबकि तर्क के आधार पर घटनाओं के घटित होने के क्रम तथा उनकी समानताओं को समझा जा सकता है। इसी के आधार पर घटनाओं का वैज्ञानिक वर्गीकरण करना सम्भव हो पाता है। **कॉम्ट** का यह भी मानना है कि "मानव मस्तिष्क जब विश्व की सभी घटनाओं को नियमित और निर्देशित करने वाले सार्वभौमिक नियमों को खोज लेता है, तब यह मानना चाहिए कि प्रत्यक्षवादी स्तर विकास के अन्तिम छोर तक पहुँच चुका है।" वास्तव में, आज का मानव इस तरह के सार्वभौमिक नियमों की खोज में अभी भी बहुत पीछे है। इसका तात्पर्य है कि प्रत्यक्षवादी या वैज्ञानिक स्तर एक क्रमिक प्रक्रिया है जिसमें प्रवेश कर चुकने के बाद भी बौद्धिक विकास के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ करना शेष है।

चिन्तन के उपर्युक्त तीन स्तरों के द्वारा कॉम्ट ने यह स्पष्ट किया कि मानव का बौद्धिक विकास एक क्रमिक प्रक्रिया के द्वारा होता है। इसके बाद भी यह सोचना उचित नहीं है कि प्रत्येक समाज में मनुष्य के चिन्तन में होने वाला परिवर्तन सदैव इसी क्रम में होगा। यह भी सम्भव है कि एक ही समाज में चिन्तन के यह तीनों स्तर साथ-साथ पाये जाते हों। यह भी हो सकता है कि एक ही समाज में जीवन के कुछ क्षेत्रों में व्यक्तियों का चिन्तन धार्मिक स्तर का हो, कुछ क्षेत्रों में व्यक्ति नैतिक मानदण्डों अथवा तात्विक चिन्तन को महत्व देते हों, जबकि कुछ दूसरे क्षेत्रों में उनका चिन्तन वैज्ञानिक स्तर का हो। इसे स्पष्ट करते हुए **जॉन फिस्के** (John Fiske) का कथन है कि "प्राय: समाज में किसी समस्या का अध्ययन व्यक्तियों द्वारा तीनों स्तरों के धरातल पर साथ-साथ किया जाता है। कुछ घटनाओं की व्याख्या धार्मिक रूप से, कुछ की तात्विक आधार पर, जबकि कुछ अन्य घटनाओं की व्याख्या वैज्ञानिक ढंग से की जाती है।"[3] वास्तविकता यह है कि

1 "The down of the nineteenth century marked the beginng of the positive stage in which observation predominates over imagination." —Quoted by Abraham and Morgan, *op. cit.*, p. 10.

2 "In the final, the positive stage, the mind has given over the vain search after absolute notions, the origin and destination of the universe, and the course of phenomena, and applies itself to the study of their laws--that is, their invariable relations of succession and resemblance." —Auguste Comte, quoted by C. N. S. Rao, *Sociology*, p. 698.

3 "Moraover, as John Fiske ergued, three methods of approach to problems are often persued simultaneously by a given person. Some phenomena are explained theologically, others metaphysically and other positively." —E. S. Bogardus, *The Development of Social Thought*, pp. 235-36.

Scanned with CamScanner